पाठ - 8

EYRCD8

भारत के महान चिकित्सक (सुश्रुत, चरक)

सृष्टि के आरम्भ से ही मानव अपनी आयु तथा अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहा है। समय-समय पर विशिष्ट व्यक्तियों को जिन वस्तुओं से कोई अनुभव हुआ उन सिद्धान्तों के संकलन से ऐसे ग्रन्थों का निर्माण हुआ जो मानव के स्वास्थ्य के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुए। 'आयुर्वेद' भी ऐसी ही एक प्राचीन चिकित्सा पद्धति है जिसमें स्वास्थ्य सम्बन्धी सिद्धान्तो की जानकारियाँ दी गई हैं।

आयु सम्बन्धी प्रत्येक जानने योग्य ज्ञान (वेद) को आयुर्वेद कहते हैं।

'आयुर्वेद' सम्बन्धी सिद्धान्तों का क्रमबद्ध संकलन कर ऋषियों ने अनेक संहिताओं का निर्माण किया है। इन संहिताओं में सुश्रुत संहिता, शल्य तन्त्र प्रधान और चरक संहिता कायचिकित्सा प्रधान ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों के रचयिता क्रमशः सुश्रुत तथा चरक हैं।

उनके समय में न आज जैसी प्रयोगशालाएँ थीं, न यन्त्र और न ही चिकित्सा सुविधाएं। अपने ज्ञान और अनुभव से उन्होंने चिकित्सा के क्षेत्र में ऐसे उल्लेखनीय कार्य किए जिनकी नींव पर आज का चिकित्सा विज्ञान सुदृढ़ता से खड़ा है। आइए चिकित्सा के क्षेत्र में पथप्रदर्शक माने जाने वाले ऐसे ही दो महान चिकित्सकों के बारे में जानंे।

सुश्रुत

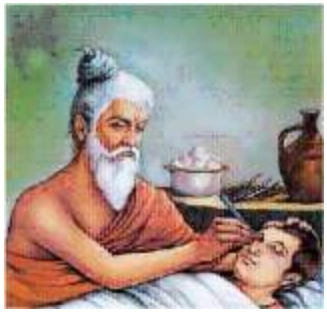

मध्य रात्रि का समय था। किसी के जोर से दरवाजा खटखटाने से सुश्रुत की नींद खुल गयी। "बाहर कौन है ?" वृद्ध चिकित्सक ने पूछा, फिर दीवार से जलती हुयी मशाल उतारी और दरवाजे पर जा पहुँचे।

“मैं एक यात्री हूँ,” किसी ने पीड़ा भरे स्वर में उत्तर दिया। मेरे साथ दुर्घटना घट गई है। मुझे आप के उपचार की आवश्यकता है।

यह सुनकर सुश्रुत ने दरवाजा खोला। सामने एक आदमी झुका हुआ खड़ा था, उसकी आँख से आँसू बह रहे थे और कटी नाक से खून।

सुश्रुत ने कहा, “उठो बेटा भीतर आओ, सब ठीक हो जाएगा, अब शान्त हो जाओ।”

वह अजनबी को एक साफ-सुथरे कमरे में ले गए। शल्य चिकित्सा के उपकरण दीवारों पर टँगे हुए थे। उन्होंने बिस्तर खोला और उस अजनबी से बैठने के लिए कहा, फिर उसे अपना चोंगा उतारने और दवा मिले पानी से मुँह धोने के लिये कहा। चिकित्सक ने अजनबी को एक गिलास में कुछ द्रव्य पीने को दिया और स्वयं शल्य चिकित्सा की तैयारी करने लगे।

बगीचे से एक बड़ा सा पत्ता लेकर उन्होंने अजनबी की नाक नापी। उसके बाद दीवार से एक चाकू और चिमटी लेकर उन्हें आग की लौ में गर्म किया। उसी गर्म चाकू से अजनबी के गाल से कुछ माँस काटा । आदमी कराहा लेकिन उसकी अनुभूतियाँ नशीला द्रव्य पीने से कुछ कम हो गई थीं।

गाल पर पट्टी बाँध कर सुश्रुत ने बड़ी सावधानी से अजनबी की नाक में दो नलिकाएं ड़ाली। गाल से काटा हुआ माँस और दवाइयाँ नाक पर लगाकर उसे पुनः आकार दे दिया, फिर नाक पर घुँघची व लाल चंदन का महीन बुरादा छिड़क कर हल्दी का रस लगा दिया और पट्टी बाँध दी। अंत में सुश्रुत ने उस अजनबी को दवाइयों और बूटियों की सूची दी जो उसे नियमित रूप से लेनी थी। उसे कुछ सप्ताह बाद वापस आने को कहा जिससे वह उसे देख सकें।

आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सुश्रुत ने जो किया था उसी का विकसित रूप आज की प्लास्टिक सर्जरी है। सुश्रुत को पूरे संसार में आज भी ’प्लास्टिक सर्जरी’ का जनक कहा जाता है।

सुश्रुत का जन्म छः सौ वर्ष ईसा पूर्व हुआ था। वह वैदिक ऋषि विश्वामित्र के वंशज थे। उन्होंने वैद्यक और शल्य चिकित्सा का ज्ञान वाराणसी में दिवोदास धनवन्तरि के आश्रम में प्राप्त किया था।

वे पहले चिकित्सक थे जिन्होंने उस शल्य क्रिया का प्रचार किया जिसे आज सिजेरियन ऑपरेशन कहते हैं। वह मूत्र नलिका में पाये जाने वाले पत्थर निकालने में, टूटी हड्डियों को जोड़ने और मोतियाबिन्द की शल्य चिकित्सा में दक्ष थे।

उन्होंने शल्य चिकित्सकों को ऑपरेशन से पहले प्रयोग में आने वाले उपकरण गर्म करने के लिये कहा जिससे कीटाणु मर जाएं। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि बीमार को ऑपरेशन से पहले नशीला द्रव्य पिलाया जाए। चिकित्सक आज भी इसका प्रयोग निश्चेतक (एनेस्थिसिया) के रूप में करते हैं।

सुश्रुत एक अच्छे अध्यापक भी थे। उन्होंने अपने शिष्यों से कहा था-

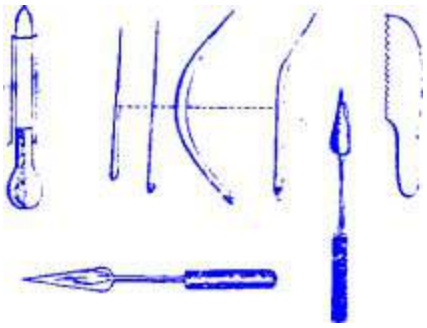

सुश्रुत के शल्य चिकित्सा के उपकरण

"अच्छा वैद्य वही है जो सिद्धान्त और अभ्यास दोनों में पारंगत हो।"

वे अपने शिष्यों से कहा करते थे कि वास्तविक शल्य चिकित्सा से पहले जानवरों की लाशों पर शल्य चिकित्सा का अभ्यास करना चाहिए।

अपनी पुस्तक 'सुश्रुत संहिता' में उन्होंने विभिन्न प्रकार के 101 चिकित्सा उपकरणों की सूची दी है। आज भी उन यंत्रों के समान यंत्र वर्तमान चिकित्सक प्रयोग में लाते हैं। वह चिमटियों के नाम उन जानवरों या पक्षियों पर रखते थे जिनकी शक्ल से वे मिलते थे, जैसे- क्रोकोडाइल फारसेप्स, हाकबिल फारसेप्स आदि।

चरक

प्राचीन काल में जब चिकित्सा विज्ञान की इतनी प्रगति नहीं हुई थी, गिने-चुने चिकित्सक ही हुआ करते थे। उस समय चिकित्सक स्वयं ही दवा बनाते, शल्य क्रिया करते और रोगों का परीक्षण करते थे। तब आज जैसी प्रयोगशालाएँ, परीक्षण यन्त्र व चिकित्सा सुविधायें नहीं थीं, फिर भी प्राचीन चिकित्सकों का चिकित्सा ज्ञान व चिकित्सा स्वास्थ्य के लिए अति लाभकारी थी। दो हजार वर्ष पूर्व भारत में ऐसे ही चिकित्सक चरक हुए हैं, जिन्होंने आयुर्वेद चिकित्सा, के क्षेत्र में शरीर विज्ञान, निदान शास्त्र और भ्रूण विज्ञान पर चरक संहिता नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक को आज भी चिकित्सा जगत् में बहुत महत्व दिया जाता है।

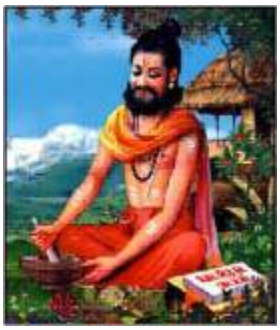

चरक वैशम्पायन के शिष्य थे। इनके 'चरक संहिता' ग्रन्थ में भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश का ही अधिक वर्णन होने से यह भी उसी प्रदेश के प्रतीत होते हैं।

कहा जाता है कि चरक को शरीर में जीवाणुओं की उपस्थिति का ज्ञान था, परन्तु इस विषय पर उन्होंने अपना कोई मत व्यक्त नहीं किया है। चरक को आनुवंशिकी के मूल सिद्धान्तों की भी जानकारी थी। चरक ने अपने समय में यह मान्यता दी थी कि बच्चों में आनुवंशिक दोष जैसे-अंधापन, लंगड़ापन जैसी विकलांगता माता या पिता की किसी कमी के कारण नहीं बल्कि डिम्बाणु या शुक्राणु की त्रुटि के कारण होती थी। यह मान्यता आज एक स्वीकृत तथ्य है।

उन्होंने शरीर में दाँतों सहित 360 हड्डियांे का होना बताया था। चरक का विश्वास था कि हृदय शरीर का नियंत्रण केन्द्र है। चरक ने शरीर रचना और भिन्न अंगों का अध्ययन किया था। उनका कहना था कि हृदय पूरे शरीर की 13 मुख्य धमनियों से जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त सैकड़ों छोटी-बड़ी द्दमनियाँ है जो सारे ऊतकों को भोजन रस पहुँचाती हैं और मल व व्यर्थ पदार्थ बाहर ले आती हैं। इन धमनियों में किसी प्रकार का विकार आ जाने से व्यक्ति बीमार हो जाता है।

प्राचीन चिकित्सक आत्रेय के निर्देशन में अग्निवेश ने एक वृहत संहिता ईसा से आठ सौ वर्ष पूर्व लिखी थी। इस वृहत संहिता को चरक ने संशोधित किया था जो चरक संहिता के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस पुस्तक का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। आज भी सुश्रुत संहिता तथा चरक संहिता की उपलब्धि इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि ये अपने-अपने विषय के सर्वोत्तम ग्रन्थ हैं। ऐसे ही प्राचीन चिकित्सकों की खोज रूपी नींव पर आज का चिकित्सा विज्ञान सुदृढ़ रूप से खड़ा है। इन संहिताओं ने नवीन चिकित्सा विज्ञान को कई क्षेत्रों में उल्लेखनीय मार्ग दर्शन दिया है।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. सुश्रुत ने पीड़ित यात्री की किस प्रकार चिकित्सा की ?
2. सुश्रुत किस प्रकार की शल्य चिकित्सा में दक्ष थे ?
3. सुश्रुत ने अपने शिष्यों से क्या कहा ?
4. 'आयुर्वेद' किसे कहते हैं ?
5. चरक ने आनुवंशिकी के संबंध में क्या मान्यता दी थी ?
6. सुश्रुत और चरक ने किन ग्रंथों की रचना की ? ये किस क्षेत्र में उपयोगी हैं ?
7. सुश्रुत को 'प्लास्टिक सर्जरी का जनक' क्यों कहा जाता है ?

8.नीचे लिखे वाक्यों पर सही (√) अथवा गलत (x) का चिह्न लगाइए-

(क)सुश्रुत एक सफल राजनीतिज्ञ थे।
(ख)सुश्रुत को प्लास्टिक सर्जरी का जनक कहा जाता है।
(ग)चरक को शरीर में जीवाणुओं की उपस्थिति का ज्ञान था।
(घ)चरक जादू से मरीजों की चिकित्सा किया करते थे।

9.सही विकल्प चुनिए-

चरक ने शरीर में दाँतों सहित हड्डियों की संख्या-

(क)चार सौ बतायी
(ख)तीन सौ पैंसठ बतायी
(ग)तीन सौ साठ बतायी
(घ)तीन सौ अस्सी बतायी

सुश्रुत ने ऑपरेशन के पहले उपकरण को गर्म करने को कहा जिससे-

(क)कीटाणु समाप्त हो जाए
(ख)धार तेज हो जाए
(ग)उपकरण चमकीला हो जाए
(घ)मरीज को कष्ट न हो

10.अगर आपको चिकित्सक बनने का अवसर मिला तो आप किस प्रकार के रोगों का इलाज करना चाहंेगे और
क्यों ? मरीजों के इलाज के समय आप किन-किन बातों का ध्यान प्रमुख रूप से रखेंगे ?

11.बड़ों से पता कीजिए-

निश्चेतक क्या है ?
प्लास्टिक सर्जरी किसे कहते हैं ?

12.अपने गुरुजी /माता-पिता अथवा बड़े भाई-बहन के साथ नजदीकी प्राथमिकस्वास्थ्य केन्द्र पर जाएं और पता करें की चिकित्सक किस प्रकार शल्य क्रिया करते हैं? अपने अनुभवों को भी लिखें।

13.बहुत सारी बीमारियाँ होने पर हमारी माँ, नानी-दादी घरेलू नुस्खों से ही इलाज कर दिया करती हैं। पता कीजिए और सूची बनाइए कि आपके घर में ऐसी घरेलू दवाइयाँ कौन-कौन सी हैं ?